IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वामी विवेकानन्द के विचारों की शैक्षिक एवं सामाजिक उपादेयता

रामकृष्ण शर्मा
(रिसर्च स्कॉलर)
निर्वाण यूनिवर्सिटी जयपुर (राज.)

सारांश–

प्रस्तुत प्रपत्र में स्वामी विवेकानंद जी के शैक्षिक विचारों ,उनके सामाजिक योगदान, तथा नारी शिक्षा में उनके विचारों पर चर्चा की गई है। हम विश्व के सबसे बड़े संस्कृति सम्पन्न राष्ट्र व देश में निवास करते हैं। जिसमें अनेकों विचार धाराओं वाले लोग निवास करते है। प्राचीन काल से लेकर अब तक हमारी संस्कृति और मूल्य स्वामी विवेकाकानन्द जी महापुरुषों के कारण ही सम्पन्नता से युक्त है। परन्तु वर्तमान समय में भी कुछ संस्कृति में समय के अनुसार परिवर्तन आये है।'

मुख्य शब्दावली– स्वामी विवेकानंद ,शैक्षिक विचार ,सामाजिक उपादेयता, नारी शिक्षा

प्रस्तावना–

हमारे भारत देश की अमर विभूति विश्व विख्यात सन्यासी स्वामी विवेकानन्द जी का आविर्भाव हुआ। स्वामी विवेकानन्द जी ने किसी शिक्षा शास्त्र की रचना नहीं की है। अपितु इस तेजस्वी महात्मा ने अखण्ड ब्रह्मचर्य की कठोर साधना की। इसी के फलस्वरूप जनकल्याण के हितार्थ जिस अमर संदेश का प्रतिपादन किया। जिसमे शिक्षा–पैसा विषय स्वतः समाविष्ट है। स्वामी जी मनुष्य मात्र को आत्मविश्वास, आत्मनिर्भर, और सशक्त बनाना चाहते थे। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने हमेशा मजबूती के साथ तथ्यों पर बल दिया कि हमें धर्म की वास्तविक मर्यादा 'स्थापित करने वाली तथा सर्वांगं विकसित चरित्र के नागरिक निर्माण करने में समर्थ शिक्षा की आवश्यकता है। उनका विश्वास था कि मानव में ज्ञान का वास है। ज्ञान मनुष्य के स्वभावसिद्ध है। क्योंकि बाहर से कोई ज्ञान नहीं आता है चाहे लौकिक ज्ञान हो या आध्यात्मिक मनुष्य अपनी शक्तियों के प्रयोग से उसकी उद्भावना करता है। यह मनुष्य की पूर्णतः पैतृक सम्पत्ति हैं। और शिक्षा उसे पूर्णतः प्रकाशित करती है। अतः स्वामी जी कहते हैं कि हमारी शिक्षा ऐसी हो जो इस लक्ष्य की पूर्ति में हमें समर्थ करें।

जीवन परिचय :–

हमारे देश की अमरविभूती का जन्म 12 जनवरी 1863 ई0 को मकर संक्रान्ति के दिन हुआ था। (विद्वानों के अनुसार मकर संक्रान्ति संवत 1920) को कलकत्ता में एक कुलीन कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके बचपन का नाम वीरेश्वर रखा गया, परन्तु उनका औपचारिक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। पिताजी का नाम विश्वनाथ दत्त तथा माता जी का नाम भुवनेश्वरी देवी था। इनके पिताजी कलकत्ता हाईकोर्ट के विश्वविख्यात वकील थे। जो कि कलकत्ता हुगली नदी के किनारे पर बांग्लादेश की सीमा से 80 किमी दूर बसा हुआ है। जब स्वामी विवेकानन्द जी बी.ए. के छात्र थे तब ये रामकृष्ण परमहंस की कृपा के पात्र बने। रामकृष्ण जी ने इन्हें पहचान लिया कि यह सामान्य मानव नहीं बनेगा। पहले तो ये स्वामी रामकृष्ण परमहंस की विचार धारा का विरोध करते थे बाद में उनके परम शिष्य हो गये। इसके बाद इन्हें नरेन्द्र स्वामी विवेकानन्द की पहचान प्राप्त कर ली। अमेरिका जैसे राष्ट्र में उनके विचारों को सुनकर वहां के लोगों

ने इनका भव्य स्वागत किया। वहाँ पर भी इनके भक्तों का जमावड़ा लग गया। इन्होंने ''रामकृष्ण मिशन की स्थापना की'' और अमेरिका में की कई रामकृष्ण मिशन की संस्थाएँ स्थापित की। और 4 जुलाई सन 1902 को इन्होंने देह त्याग दी।

शिक्षा के क्षेत्र में योगदान

स्वामी विवेकानन्द प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को प्रमय देते थे। वर्तमान शिक्षा प्रणाली जिसमें ज्ञान जैसी पवित्र वस्तु को मूल्य लेकर बेचा जाता है। उन्हें अमान्य थी। उनके विचारों के अनुसार शिक्षा का स्वरूप 'गुरुगृह निवास' होना चाहिए। उनका विचार था कि बालक को वाल्यावस्था से ही ऐसे गुरु के साथ रहना चाहिए, जिसका चरित्र प्रज्ज्वलित अग्नि की तरह हो। जिससे उच्चतम् शिक्षा का सजीव आदर्श शिष्य के समक्ष बना रहे। शिक्षकों को भी मुक्तहस्त होकर विद्यादान तथा ज्ञानदान करना चाहिए। प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में गुरु जी विद्यार्थियों को निशुल्क शिक्षा प्रदान किया करते थे क्योंकि सभी प्रकार की व्यवस्थाएँ राजा–महाराजाओं द्वारा आश्रमो को सभी प्रकार की मदद दी जाती थी। स्वामी विवेकानन्द जी शिक्षा का सम्पूर्ण विकास 'वैदिक व संस्कारों युक्त शिक्षा पर अधिक बल दिया था। स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था कि 'शिक्षा वही है जो बालक के शारीरिक, मानसिक, अध्यात्मिक तथा चारित्रिक (नैतिक गुणों) गुणों का विकास कर सके'। अर्थात शिक्षा का स्वरूप बालक के शरीर या तन, मन, आध्यात्मिकता व चरित्र पर प्रबल जोर दिया।

'स्वामी विवेकानन्द जी ने शिक्षा के क्षेत्र मे विकास करते हेतु अनेकों प्रकार की संस्कृति युक्त रचनाओं व पुरुषो की रचना की जिनके नाम निम्न प्रकार से है। किः–

- कर्मयोग
- ज्ञानयोग
- भारतीय नारी
- मेरा जीवन और ध्येय
- मरणोत्तर जीवन
- राजयोग
- जाति, संस्कृति और समाजवाद
- ईशदूत ईसा
- शिक्षा
- भक्तियोग

स्वामी विवेकानन्द जी ने 'शिक्षा' रचना में नये भारत की रचना और एक गतिशील (विकाशशील) राष्ट्र की शिक्षा का नया स्वरूप प्रदान किया है। इस पुस्तक के ज्ञान से सभी गुरु (शिक्षकों) व शिष्यों (विद्यार्थियों) पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। जिसकी मुख्य उदेश्य सुशिक्षित राष्ट्र की कल्पना करना है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने अपने गुरू रामकृष्ण परमहंस जी के सानिध्य में भक्तियोग से ही बालक के सर्वांगीण विकास में योगदान प्रदान किया है।

स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार

स्वामी विवेकानन्द जी का अवतरण जब हुआ था जब हमारा देश गुलाम था उस समय की शिक्षा दयनीय स्थिति में थी तब उस समय इन्होने समाज की सही शिक्षा व मार्ग प्रसस्त किया था।। स्वामी विवेकानन्द जी विचारों व शिक्षा से लोगो को देश को स्वतन्त्र कराने की प्रेरणा प्राप्त की।

स्वामी विवेकानन्द जी ने स्वयं मनुष्य के ज्ञान व सीख पर इस प्रकार विचार प्रकट किये है। कि :–

- पढ़ने के लिए जरूरी है कि एकाग्रता, ध्यान, व इन्द्रियों पर संयम रखना
- ज्ञान व्यक्ति का वर्तमान होता है।
- उठो और जागो और तब तक मत रुको जब तक तुम्हें लक्ष्य हासिल न हो जाये।
- जब तक मानव को जीना, तब तक सीखना और अनुभवशील ही सर्वश्रेष्ठ गुरु होता है।
- पवित्रता, धैर्य और उद्यम ये तीनों गुण एक साथ समायोजित है।
- दूसरों पर निर्भर रहना मूर्खता है।
- बिना किसी बुराई व अपवाद की चिंता किये अपने लक्ष्य को प्राप्त करो, सफलता जरूर मिलेगी।

अतः इस प्रकार स्वामी जी के शैक्षिक विचार समाज को नये उज्ज्वल भविष्य की सरोकार करेंगे।

स्वामी विवेकानन्द जी का समाज में योगदान

स्वामी विवेकानन्द्र जी ने हमारे समाज की उस समय की दयनीय स्थिति को देखकर उन्होंने समाज में स्थान–स्थान पर जाकर शिक्षा प्रदान की और समाज को एक नया जामा पहनाना जिससे लोग जागरूक होकर अपने भविष्य की चिन्ता में लग गये तथा राष्ट्र को स्वतंत्रता प्रदान करने का अच्छा व सटीक रास्ता दिखलाया । समाज में व्याप्त बुराइयों को व धर्मान्धता को दूर किया। सभी लोगों ने स्वामी विवेकानन्द जी के बताये हुए रास्ते पर अमल किया और संस्कारवान शिक्षा प्राप्त की राष्ट्र स्वतंत्रता में अच्छा योगदान प्राप्त किया। स्वामी विवेकानन्द जी ने शारीरिक और स्नायु शक्ति का समान रूप से अभिवृद्धि पर जोर दिया। स्वामी जी ने कहा था कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति पुरुष व महिला के साथ, जाति, धर्म, व अस्पृश्यता का भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए तब हमारा समाज इस संकीर्ण सोच से बहार आ जायेगा उस दिन हमारा राष्ट्र व समाज इस दुनिया में सर्वोपरी होगा। स्वामी जी ने खास तौर पर युवाओं को अध्यात्म एवं योग के प्रति समर्पण की भावना को जागरूक किया। वर्तमान समय में युवाओं के प्रेरणाश्रोत स्वामी विवेकानन्द जी है। सम्पूर्ण भारत व विश्व में युवा वर्ग उनका अपना परम व श्रेष्ठ गुरू मानते है।

स्वामी विवेकानन्द जी नारी शिक्षा में योगदान

स्वामी विवेकानन्द जी ने विश्वस्तर पर स्त्री शिक्षा पर पुरजोर समर्थन किया था। वे स्त्री शिक्षा के विशेष हिमायती थे। भारतीय आध्यात्म का परचम लहराने वाले और भारत की गौरवशाली परम्परा एवं संस्कृति के सच्चे संवाहक स्वामी विवेकानन्द जी थे। विवेकानन्द जी साहित्य दर्शन और इतिहास के प्रकाण्ड विद्वान थे। इन्होंने भारतीय स्त्रियों की दुर्दशा को देखकर स्वामी जी को बहुत दुःख होता था। स्त्री व पुरुषों के बीच व्याप्त मतभेद को देखकर गहरा आघात लगा था। उन्होंने स्पष्ट शब्दों मे घोषणा की है। कि 'सभी प्राणियों में वही एक आत्मा विद्यमान है, स्त्रियों के ऊपर अनुचित नियंत्रण सर्वथा अवांछनीय है।

उन्होंने वैदिक कालीन (युग) की मैत्रेयी, गार्गी आदि पुण्य स्मृति महिलाओं ने ऋषियों का स्थान ले लिया था। सभी उन्नत राष्ट्रों ने स्त्रियों को समुचित स्थान देकर महानता प्राप्त की। जो देश, राष्ट्र स्त्रियों का आदर नहीं करते वे कभी बड़े नहीं हो पाये और न भविष्य में बड़े होंगें। मनु स्मृति में लिखा गया है कि–जहाँ स्त्रियों की इज्जत होती है वहां देवता निवास करते है। संस्कृत में भी मनुस्मृति लिखा गया कि ''यत्रै नार्यस्तु न पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैवास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया।।''

संस्कृत भाषा की शिक्षा के प्रति विचार

स्वामी विवेकानन्द जी ने अन्य भाषाओं के साथ ही संस्कृत भाषा को बहुत महत्व दिया था। उन्होंने कहा था कि शिक्षा में संस्कृत शिक्षा पर प्रबल रूप से जोर दिया जाना चाहिए। क्योंकि संस्कृत शब्दों की ध्वानि मात्र से ही हमारी जाति को प्रतिष्ठा, बल तथा शक्ति प्राप्त होती है। भगवान बुद्ध ने भी यही गलती की थी कि उन्होंने जनता में संस्कृत शिक्षा में विस्तार बंद कर दिया जाय। क्योंकि वे शीघ्र व तत्कालिक परिणाम चाहते थे। इसलिए उन दिनों उन्होंने पालि भाषा में संस्कृत भाषा के निबदु भाषो का भाषान्तर करके उनका प्रचार किया। यह बहुत ही सुन्दर हुआ था। वे जनता की भाषा में बोले तथा जनता ने उनकी बात को समझ लिया और उनके भाव शीघ्र फैले थे। कहा कि हमारा राष्ट्र झोपडियों में निवास करता है। क्योंकि गुरुकुलों का स्वरूप झोपड़ियों में ही था। जहाँ से भगवान परशुराम के शिष्य गुरु द्रोणाचार्य और कृपाचार्य जैसे शिष्य निकले व कर्ण जैसा महावीर तथा गुरू दोणाचार्य के शिष्य गाण्डीव धारी अर्जुन, भीम आदि जैसे योद्धा पैदा हुए थे। अतः स्वामी विवेकानन्द जी इसी प्रकार के शिष्य उसी संस्कृति भाषा कालीन शिक्षा को सर्वोपरी मानते है।

स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार धार्मिक शिक्षा का महत्व

स्वामी विवेकानन्द जी धार्मिक ऐसी शिक्षा के प्रवल समर्थक थे। धार्मिक शिक्षा, पुस्तकों द्वारा न देकर संस्कारों द्वारा देनी चाहिए। जो कि बल दिया जिससे आज के बालक भविष्य में निर्भीक एवं योद्धा के रूप में गीता का अध्ययन करके देश की उन्नति कर सकें। मानसिक उद्देश्य पर बल देकर उन्होंने बताया कि हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिसे प्राप्त करके मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके तथा जिससे मनुष्य में विनय, शीलता एवं सभ्यता व चारित्रिक विकास हो सके। उपनिषद में भी कहा गया है। कि ''विद्या ददाति विनययु...विनयाधाति पात्रताम्'' अर्थात विद्या का जब धार्मिक स्वरूप इस प्रकार का होगा तब उसका स्वरूप अच्छा व उन्नति परक होगा।

निष्कर्ष

अतः इस प्रकार स्वामी विवेकानन्द के जीवन से हमें धार्मिक कम आध्यात्मिकता ज्यादा बना दिया उन्होने ने ही सबसे पहले हमारे देश से बाहर जाकर हिन्दू धर्म की व्याख्या की वे सभी धर्मो, जाति व स्त्रियों की इज्जत करते हैं। उनका लक्ष्य मात्र, अपने देश ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व को उचित मार्गदर्शन प्रदान करना था। वे सम्पूर्ण विश्व में जगह–जगह जाकर समाज को नया दर्पन दिखाकर एक मानवता का पाठ पढना था। हमारे देश में व्याप्त कुरूतियों व अशिक्षा को दूर करने में बहुत योगदान दिया था।

गुरु शिष्यों रिश्ते हो, स्त्री शिक्षा से सम्बंधित कार्य हो, समाज सुधार व सामाजिक उत्थान के लिए, तथा धार्मिक शिक्षा आदि सभी कार्यों को नया स्वरूप प्रदान किया था। जो एक उज्ज्वल भविष्य प्रदान करने वाला है। स्वामी जी ने भारतीय संस्कृति के प्रत्येक पहलु का अध्ययन अच्छे से किया है। जिससे कि सम्पूर्ण राष्ट्र व देश का विकास अच्छे से किया जा सकता है। स्वामी विवेकानन्द जी के विचारों से वे कोई सामान्य पुरुष न होकर एक महान आत्मा थी जो हमारे राष्ट्र व विश्व को सर्वोच्च ऊचाई पर ले जाने वाले महापुरूष थे। अत हम सभी को उनके आदर्शों पर चलना चाहिए जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र का विकास हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- डॉ. वैद्यनाथ प्रसाद, ***विश्व के महान शिक्षा शास्त्री***, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना
- गायत्री पगडी, ***स्वामी विवेकानन्द***, क्रियेटिव मीडिया अहमदाबाद
- सचिन सिंघल, ***स्वामी विवेकानन्द***, प्रभात प्रकाशन, पूना
- स्वामी विवेकानन्द, ***राजयोग***, रामकृष्ण मठ
- स्वामी विवेकानन्द, ***कर्मयोग***, रामकृष्ण मठ
- एन आर सक्सेना, डॉ. शिखा चतुर्वेदी ***उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा***, आर लाल बुक डिपो, मेरठ

- बृजभूषण शर्मा, ***शैक्षिक समाज विज्ञान***, उत्तरप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, मेरठ
- प्रो. रमन बिहारी लाल, ***शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्र के सिद्धांत***, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ
- डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, जेपी जैन, ***उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक***, आर लाल बुक डिपो, मेरठ
- मनोज तिवारी, ***स्वामी विवेकानन्द***, मनोज पब्लिकेशन